

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারায়ণভট্টতিরি ঝিরচিতম্
॥শ্রীমন্নারায়ণীয়ম্ ॥

দশক - ৪৬

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते कृष्णाय परब्रह्मणे नमः
श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीमन्नारायणीयम् ॥

दशक - ४७

विश्वरूपदर्शनवर्णनम्

अयि देव पुरा किल त्वयि
स्वयमुत्तानशये सुनक्षये ।
परिजृम्भणतो व्यापारुते
वदने विश्वमचष्ट बल्लरी ॥ १ ॥

पुनरप्यथ बालकैः समं
त्वयि लीलानिरते जगतपते ।
फलसंशयवशं न क्रुधा
तव मृद्वोजनमूचुरर्भकाः ॥ २ ॥

अयि ते प्रलयारधौ विभो
क्षितितोयादिसमस्तभङ्गिणः ।
मृदुपाशनतो रज्जा भवे-
दिति भीता जननी चूकोप सा ॥ ३ ॥

अयि दुर्बिनयात्प्रक त्वया
किमु मृतसा वत वतस भङ्गिता ।
इति मातृगिरं चिरं विभो
वितथां त्वं प्रतिजङ्गिषे हसन् ॥ ४ ॥

अयि ते सकलैरिनिश्चिते
विमतिश्चेद्बदनं विदार्यताम् ।
इति मातृविभतसितो मुखं
विकसतपद्मनिभं व्यादारयः ॥ ५ ॥

অপি মুল্লরদর্শনোতসুকাং
 জননীং তাং বহু তর্পর্যনির।
 পৃথিবীং নিখিলাং ন কেবলং
 ভূরনান্যপ্যাখিলান্যদীদৃশঃ ॥ ৬ ॥

কুহচিৎখনমম্বুধিঃ ক্বচিৎ
 ক্বচিদভ্রং কুহচিদ্রসাতলম্।
 মনুজা দনুজাঃ ক্বচিৎ সুরা
 দদৃশে কিং ন তদা স্বদাননে ॥ ৭ ॥

কলশাম্বুধিশাযিনং পুনঃ
 পররৈকুঠপদাধিরাসিনম্।
 স্বপুরশ্চ নিজার্ভকাস্বকং
 কতিধা স্বাং ন দদর্শ সা মুখে ॥ ৮ ॥

রিকসদভুরনে মুখোদরে
 ননু ভূয়োপি তথারিধাননঃ।
 অনয়া স্ফুটমীক্ষিতো ভরা-
 ননরস্থং জগতাং বতাতনোত্ ॥ ৯ ॥

ধৃততত্ত্বধিযং তদা ক্ষণং
 জননীং তাং প্রণয়েন মোহযন্।
 স্তনমম্ব দিশেতুপাসজন
 ভগবন্নদভুতবাল পাহি মাম্ ॥ ১০ ॥
